आर्थिक संवृद्धि एवं आर्थिक विकास

आर्थिक संवृद्धि Economic growth से हमारा अभिप्राय राष्ट्रीय आय के विस्तार से है। अतः आर्थिक संवृद्धि में केवल इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि क्या किसी कालावधि में इससे पहले के काल की तुलना में मात्रा की दृष्टि से अधिक उत्पादन हो रहा है या नहीं। आर्थिक संवृद्धि एक परिमाणात्मक संकल्पना (Quantitative Concept) है। इसके विपरीत आर्थिक विकास अपेक्षाकृत अधिक व्यापक धारणा है। आर्थिक विकास का क्षेत्र आर्थिक संवृद्धि से कहीं अधिक है। चाहे कई अर्थशास्त्री आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास को एक दूसरे के पर्यायवाची के रूप में इस्तेमाल करते रहे हैं।

चार्ल्स किंडलबर्गर Charles P. Kindleberger ने इस संबंध में उल्लेख किया है "आर्थिक संवृद्धि का अर्थ अधिक उत्पादन से है, जबकि आर्थिक विकास से अभिप्राय अधिक उत्पादन के अतिरिक्त तकनीकी एवं संस्थानात्मक व्यवस्था में हुए परिवर्तनों से भी है जिनके कारण वहाँ उत्पाद Output निर्मित एवं वितरित किया जाता है।"

आर्थिक संवृद्धि में न केवल अधिक मात्रा में आदानों Inputs के कारण अधिक उत्पादन को शामिल किया जाता है बल्कि इसमें प्रति इकाई आदान के बदले अधिक उत्पादन को समावेश भी है अर्थात् आर्थिक

P.T.O

संवृद्धि की धारणा में उत्पादन में समय के साथ होने वाली अधिक कार्यकुशलता को शामिल किया जाता है।

विकास की धारणा इससे कहीं विस्तृत है। इसमें उत्पादन की संरचना में होने वाले परिवर्तन और क्षेत्रानुसार आयातों के आवण्टन में परिवर्तन को भी शामिल किया जाता है। आर्थिक विकास के बिना आर्थिक संवृद्धि तो सम्भव है, परन्तु आर्थिक संवृद्धि के बिना आर्थिक विकास सम्भव नहीं है, क्योंकि तकनीकी एवं संस्थानात्मक व्यवस्था में परिवर्तन का उद्देश्य राष्ट्रीय आय से प्राप्त वृद्धि को विभिन्न क्षेत्रों और जनसंख्या के विभिन्न वर्गों में सापेक्षतः अधिक न्यायोचित रूप में बाँटना है।

जब तक कोई अर्थव्यवस्था अपनी निर्वाह आवश्यकताओं से अधिक पैदा नहीं करती, तब तक वह देश की जनसंख्या के जीवन-स्तर को उन्नत करने और उसमें आर्थिक न्याय पूर्ण वितरण लाने में सफल नहीं हो सकती, जिससे कि जनसामान्य की वास्तविक आय में वृद्धि हो सके।

आर्थिक विकास की धारणा की व्याख्या किसी समाज में विभिन्न नीति-उद्देश्यों के रूप में भी करना संभव है। इस धारणा का आधार समाज द्वारा स्वीकृत वे मूल्य हैं, जिनके आधार पर समाज के निर्माण का संकल्प किया गया। इस दृष्टि से आर्थिक विकास गुणात्मक रूप में आर्थिक संवृद्धि से भिन्न है। आर्थिक विकास की किस परिभाषा को सबसे अधिक स्वीकृति प्राप्त हो सकती है।

P.T.O

प्रोफेसर जी० एम० मेयर के अनुसार

"आर्थिक विकास की परिभाषा एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में की जा सकती है, जिसके परिणामस्वरूप कोई देश एक लम्बी कालावधि में अपनी वास्तविक प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करता है, परम निर्धनता रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या में वृद्धि न हो और आय का वितरण और अधिक असमान न हो जाए।"

आर्थिक विकास के निम्न बातें ~~निम्न~~ सुव्यक्त होती हैं।

(1) आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है →

आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कुछ शक्तियाँ जो एक दूसरे से संबंधित हैं, कारण और कार्य के रूप में क्रियाशील होती है। आर्थिक विकास की परीक्षा एक प्रगतिशील प्रोग्राम के रूप करनी पड़ती है। जिसके फलस्वरूप यह किसी देश की जनसंख्या, विशेषकर निर्धन जनसंख्या के लिए अधिक अर्थपूर्ण सिद्ध हो सकती है। जिसके कारण और परिणाम के आपसी संबंध स्पष्ट हो सके।

(2) निर्धनता दूर करना आर्थिक विकास का प्रधान लक्ष्य :→ आर्थिक विकास की मूल प्रेरणा राष्ट्रों में निर्धनता दूर करने के लिए राष्ट्रीय आय में वृद्धि को लक्ष्य माना जाता है। राष्ट्रीय आय की वृद्धि-दर जनसंख्या की वृद्धि दर के बराबर है तो प्रति व्यक्ति आय स्थिर रहेगी। यदि जनसंख्या की वृद्धि दर राष्ट्रीय आय की वृद्धि-दर से अधिक है तो प्रति व्यक्ति आय कम हो जाएगी। इन दोनों परिस्थितियों में जीवन-स्तर स्थिर रहेंगे या गिर जाएँगे। इसे हम आर्थिक विकास समझना भूल होगी।

(3) आर्थिक विकास का अर्थ वास्तविक आय में दीर्घकालीन वृद्धि है :→ आर्थिक विकास का अर्थ वास्तविक आय में दीर्घकाल में लगातार वृद्धि है, न कि अल्पकाल में वृद्धि जो कि सामान्यतः व्यापार चक्रों के तेजी के काल में अधिक होती है। आर्थिक विकास का मूल बात यह है कि राष्ट्रीय एवं प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि की प्रवृत्ति कम-से-कम दो या तीन दशक तक बनी रहनी चाहिए। आर्थिक विकास को प्रारंभ करने और उसे दीर्घकाल तक बनाए रखने के कठिन कार्य में स्पष्ट गति सफलता अनिवार्य है।

(4) आर्थिक विकास का उप-लक्ष्य आर्थिक असमानता में कमी लाना है :→ आर्थिक विकास का प्रधान लक्ष्य प्रति व्यक्ति आय वृद्धि के साथ-साथ आर्थिक असमानता में कमी करना आवश्यक है। इस के लिए निर्धनता रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या परम और सापेक्ष रूप में कम करनी होगी। वास्तविक प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई, परन्तु जनसंख्या की वृद्धि और आर्थिक विकास के लाभों के असमान वितरण के कारण निर्धनता रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या की मात्रा में वृद्धि हुई है। आर्थिक विकास के एक समन्वित अंग के रूप में आय के वितरण की कसौटी को महत्व देना ही होगा।

(5) आर्थिक विकास के कुछ अन्य उप-लक्ष्य है :→ उपभोग का न्यूनतम स्तर, बेरोजगारी को समाप्त करना, विभिन्न क्षेत्रों के विकास एवं समृद्धि में भारी अन्तरों को कम करना, अर्थव्यवस्था का विशाखन और आधुनिकीकरण इन सभी लक्ष्यों के मूल में यह बात निहित है कि आर्थिक

P.T.O

विकास किसी एक क्षेत्र या कुछ क्षेत्रों या किसी एक वर्ग या कुछ उच्च वर्गों तक ही सीमित न रहे बल्कि इसका प्रभाव व्यापक रूप में समग्र अर्थव्यवस्था पर पड़े। इस प्रकार आधुनिकीकरण की क्रिया का विस्तार होना चाहिए। ताकि पारम्परिक अर्थव्यवस्था को आधुनिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तित किया जा सके।

प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को आर्थिक विकास का सर्वोत्तम उपलब्ध सूचक माना जाता है। परन्तु इसे आर्थिक कल्याण या आर्थिक प्रगति का पर्यायवाची समझना उचित नहीं होगा। कुल राष्ट्रीय उत्पाद Gross National product में वृद्धि व्यक्त हुई, परन्तु इनमें अभी भी निर्धनता-रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या की आधी मात्रा विद्यमान है। इनमें बेरोजगारी बढ़ती जा रही है और आय की असमानताएँ और उग्र हो गयी है। अतः विकास अर्थशास्त्री अब कुल राष्ट्रीय आय की या उत्पाद की बलिवेदी के ही पुजारी नहीं रहे बल्कि प्रत्यक्ष रूप में विकास-प्रक्रिया की गुणवत्ता पर ध्यान केन्द्रित करने लगे हैं।

कुल राष्ट्रीय उत्पाद का ध्यान रखना जा चाहिए जो स्वयं निर्धनता का ध्यान कर लेगा। अब उसे इसे उलट देना चाहिए और उसे निर्धनता को समाप्त करने के लिए यह प्रक्रिया कुल राष्ट्रीय उत्पाद का ध्यान कर लेगी। उसे कुल राष्ट्रीय उत्पाद की संरचना का इसकी वृद्धि दर की अपेक्षा अधिक ध्यान रखना होगा।